

वर्ण-विचार और उच्चारण (Orthography and Pronunciation)

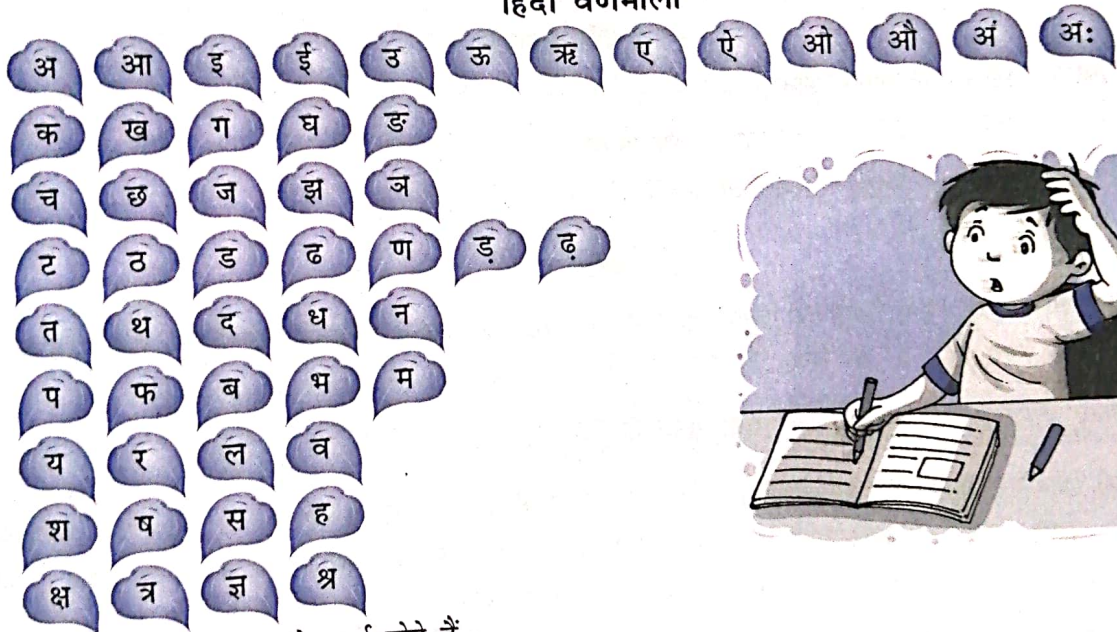
वर्ण-बोलते समय हमारे मुख से जो ध्वनियाँ निकलती हैं, उनको लिखने के लिए हम कुछ चिह्नों का प्रयोग करते हैं, इन चिह्नों को ही वर्ण कहते हैं; जैसे-अ, आ, इ, क्, ख्, ग्, आदि। यह भाषा का सबसे छोटा रूप है। इसे और छोटा नहीं किया जा सकता है।

वर्ण भाषा की वह छोटी-से-छोटी इकाई है, जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते।

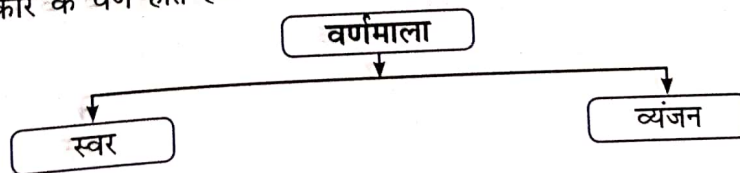
वर्णमाला

वर्णों का क्रमबद्ध समूह वर्णमाला कहलाता है।

हिंदी वर्णमाला



हिंदी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण होते हैं-



स्वर

जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती, वे स्वर कहलाते हैं।

स्वरों की संख्या 11 है—



स्वर के भेद

स्वर के तीन भेद हैं—

1. **ह्रस्व स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत कम समय लगता है, वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इनकी संख्या चार है—अ, इ, उ तथा ऋ। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।
2. **दीर्घ स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या सात है—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ तथा औ।
3. **प्लुत स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वर से भी अधिक समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं अर्थात् जब दीर्घ स्वर को और लंबा खींचकर बोला जाता है, तब इसका प्रयोग किया जाता है, जैसे ओ३म। '३' प्लुत स्वर है।

नोट: हिंदी में प्लुत स्वर का प्रयोग नहीं किया जाता है।

स्वरों की मात्राएँ

स्वरों का प्रयोग दो प्रकार से किया जाता है—

1. स्वतंत्र रूप से—जैसे—अनार, आग, इमरती, आइए आदि।
2. मात्रा रूप में—जैसे—राम, मिठाई, चीनी आदि।

मात्रा

स्वरों को जब व्यंजनों के साथ मिलाकर लिखा जाता है तो उनके लिए कुछ निश्चित चिह्नों का प्रयोग किया जाता है; जैसे 'आ' के लिए 'ा', 'इ' के लिए 'ि', 'उ' के लिए 'ु' आदि।

स्वरों के लिए निश्चित किए गए चिह्न मात्रा कहलाते हैं।

स्वर 'अ' को छोड़कर शेष सभी स्वरों की मात्राएँ होती हैं। सभी व्यंजनों का उच्चारण 'अ' स्वर की सहायता से होता है। अतः सभी व्यंजनों में स्वर 'अ' मिला रहता है। जब व्यंजनों से 'अ' को अलग कर दिया जाता है तो वे हलन्त (्) के साथ लिखे जाते हैं तथा आधे व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—

क = क् + अ

च = च् + अ

त = त् + अ

य = य् + अ

अन्य स्वरों की मात्राएँ तथा व्यंजनों के साथ उनके प्रयोग—

स्वर	मात्रा	व्यंजन + मात्रा	उदाहरण
आ	।	क + । = का	काम, सामान, ताला
इ	ि	क + ि = कि	किला, मिठाई, हिरण
ई	ी	क + ी = की	कील, चील, तीतर
उ	ु	क + उ = कु	कुमकुम, गुलाब, रुई
ऊ	ू	क + ू = कू	कूलर, सूरत, रूप
ऋ	ॄ	क + ॄ = कृ	कृपया, हृदय, तृण
ए	॑	क + ॑ = के	केला, तेल, रेलगाड़ी
ऐ	॒	क + ॒ = कै	कैसा, हैरान, मैना
ओ	॑	क + ॑ = को	कोमल, रोना, थोड़ा
औ	॑	क + ॑ = कौ	कौन, मौसम, दौलत

अयोगवाह

कुछ वर्ण ऐसे हैं, जो वर्णमाला में स्वरों के बाद लिखे जाते हैं परंतु ये न तो स्वर होते हैं और न ही व्यंजन। ये अयोगवाह कहलाते हैं। अयोगवाह का अर्थ है—योग न होने पर भी साथ रहना। ये संख्या में दो हैं—अं तथा अः।

अं—इसे अनुस्वार कहते हैं। इसका उच्चारण नाक से होता है। इसका चिह्न 'ँ' है। जैसे—कंघा, हंस, लंगूर आदि।

अः—इसे विसर्ग कहते हैं। इसका उच्चारण 'ह' की भाँति होता है। इसका चिह्न (:) है। इसे व्यंजनों के आगे लगाते हैं; जैसे—अतः, प्रातःकाल, पुनः आदि।

अँ—इसे अनुनासिक कहते हैं। इसका उच्चारण नाक तथा मुँह दोनों से होता है; इसका चिह्न 'ँ' है; जैसे—आँख, हँसी, पाँच, दाँत, आँगन आदि।

व्यंजन

जिन वर्णों का उच्चारण स्वर वर्णों की सहायता से होता है, उन्हें व्यंजन कहते हैं।

व्यंजन तीन प्रकार के होते हैं—

1. स्पर्श व्यंजन—जिन व्यंजनों के उच्चारण में वायु मुख के विभिन्न भागों (कंठ, तालु, मूर्धा, दंत और ओष्ठ) को स्पर्श करती हुई बाहर आती है, वे स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। 'क' से 'म' तक के सभी वर्ण ('ङ', 'ढ' सहित) स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं। इनकी संख्या 27 है।

व्यंजन	उच्चारण स्थान
क, ख, ग, घ, ङ	कंठ
च, छ, ज, झ, ञ	तालु
ट, ठ, ड, ढ, ण, (ड़, ढ)	मूर्धा
त, थ, द, ध, न	दंत
प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ

2. अंतस्थ व्यंजन—वे व्यंजन जिनका उच्चारण न तो पूरी तरह से व्यंजनों की तरह होता है और न ही स्वरों की तरह, बल्कि स्वरों और व्यंजनों के मध्य का है, वे अंतस्थ व्यंजन कहलाते हैं। इनके उच्चारण के साथ जिह्वा मुख के किसी भी भाग को स्पर्श नहीं करती। इनकी संख्या चार है—य, र, ल, वा।

3. ऊष्म व्यंजन—वे व्यंजन जिनके उच्चारण में वायु मुख के किसी भाग से रगड़ खाकर बाहर आती है; वे ऊष्म व्यंजन कहलाते हैं। इनकी संख्या चार है—श, ष, स, ह।

अन्य व्यंजन

संयुक्त व्यंजन—ये व्यंजन दो व्यंजनों के योग से बने हैं, जो अपने मूल रूप से भिन्न हैं। इनकी संख्या चार है।

क्ष (क् + ष)

त्र (त् + र)

ज्ञ (ज् + ज)

श्र (श् + र)

मानक वर्णमाला में इन चारों को सम्मिलित किया गया है—

संयुक्ताक्षर—जब एक स्वर रहित व्यंजन के बाद कोई अन्य स्वर सहित व्यंजन आए तब वे संयुक्ताक्षर कहलाते हैं; जैसे—

क् + य = क्यारी, क्या

क् + त = मुक्त, भक्त

प् + य = प्याज, प्याला

च् + छ = मच्छर, गुच्छा

क् + ख = मक्खी, मक्खन

श् + य = अवश्य, दृश्य

द्वित्व व्यंजन—जब एक ही व्यंजन एक बार स्वर रहित तथा दूसरी बार स्वर सहित आए तो द्वित्व व्यंजन कहलाता है; जैसे—

क्क = मक्का, पक्का

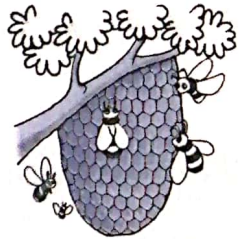
च्च = बच्चा, सच्चा

ट्ट = मिट्टी, खट्टा

ल्ल = बल्ला, पल्ला

त्त = पत्ता, छत्ता

म्म = चम्मच, सम्मिलित



श्वास-वायु के आधार पर व्यंजन भेद

जब हम ध्वनियों का उच्चारण करते हैं तो कुछ ध्वनियों के उच्चारण में कम वायु बाहर आती है तथा कुछ ध्वनियों के उच्चारण में अधिक वायु बाहर आती है। इस आधार पर व्यंजनों के दो भेद हैं—

1. अल्पप्राण

2. महाप्राण

1. अल्पप्राण—जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से निकलने वाली वायु की मात्रा कम हो, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन

कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा तथा पाँचवाँ व्यंजन तथा अन्तस्थ व्यंजन अल्पप्राण होते हैं—
क, ग, ङ, च, ज, झ, ट, ड, ण, त, द, न, प, ब, म, य, र, ल, वा।

2. महाप्राण—जिन व्यंजनों के उच्चारण में मुख से निकलने वाली वायु की मात्रा अल्पप्राण व्यंजन की अपेक्षाकृत अधिक हो उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा व्यंजन तथा ऊष्म व्यंजन महाप्राण व्यंजन होते हैं—ख, घ, छ, झ, ठ, ड, ध, भ, फ, भ, श, ष, स, ह।

विशेष

- श्र तथा शृ में अंतर—श्र संयुक्त वर्ण है, जो श् तथा र के योग से बना है जबकि श में ऋ की मौलिका लगाकर शृ बना है। इनके उच्चारण में भी अंतर है।
- उर्दू के अनेक शब्द हिंदी में आ गए हैं, जिनके शुद्ध उच्चारण के लिए उनके साथ नुक्ता चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—जरा (थोड़ा-सा), फ़न (गुण) आदि।
- संयुक्ताक्षर तीन प्रकार से लिखे जाते हैं—
 - * खड़ी पाई हटाकर; जैसे—च्छ, प्य, ब्द आदि।
 - * घुंटी हटाकर; जैसे—क्य, प्त आदि।
 - * हलन्त लगाकर; जैसे—दृठ, द्ध, द्य, ड्ड आदि।

र के रूप

1. जब र किसी व्यंजन से पहले स्वर रहित हो, तो वह अगले व्यंजन पर रेफ ($\overset{\cdot}{\text{r}}$) के रूप में लगता है; जैसे—

र + म = कर्म

र + क = सर्कस

2. जब र किसी स्वर रहित व्यंजन के बाद आए तो पदेन (r_1) के रूप में लगाया जाता है; जैसे—

क् + र = चक्र

प् + र = प्रातः

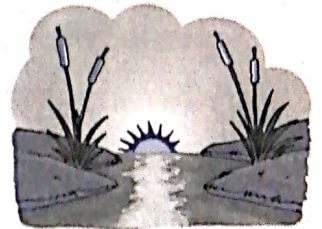
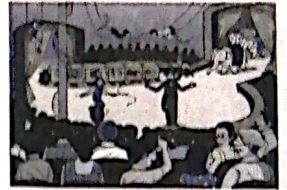
म् + र = नम्रता

भ् + र = भ्राता

3. द् या ड् के बाद र हो तो पदेन (r_2) इस रूप में लगाया जाता है; जैसे—

द् + र = द्रक

ड् + र = ड्रम



वर्ण-विच्छेद

किसी भी शब्द में प्रयुक्त सभी वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है अर्थात् वर्ण-विच्छेद करते समय शब्द के स्वर तथा व्यंजनों को अलग-अलग करके लिखा जाता है; जैसे—

समाचार = स् + अ + म् + आ + च् + आ + र् + अ

घृणा = घ् + ऋ + ण् + आ

नर्तकी = न् + अ + र् + त् + अ + क् + ई

वैद्य = व् + ऐ + द् + य् + अ



आओ दोहरा लें

- ❖ वर्ण भाषा की वह छोटी-से-छोटी इकाई है, जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते।
- ❖ वर्णों का व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध समूह वर्णमाला कहलाता है।
- ❖ हिंदी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण होते हैं—स्वर तथा व्यंजन।
- ❖ जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की आवश्यकता नहीं होती, वे स्वर कहलाते हैं।
- ❖ स्वर तीन प्रकार के होते हैं—ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत।
- ❖ स्वरों के लिए निश्चित किए गए चिह्न मात्रा कहलाते हैं।
- ❖ जिन वर्णों के उच्चारण में स्वरों की सहायता ली जाती है, वे व्यंजन कहलाते हैं।
- ❖ व्यंजन मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं—स्पर्श, अंतस्थ तथा ऊष्म।
- ❖ श्वास वायु के आधार पर व्यंजन दो प्रकार के होते हैं—अल्पप्राण तथा महाप्राण।
- ❖ वर्ण-विच्छेद में स्वर तथा व्यंजन अलग-अलग करके लिखे जाते हैं।



अभ्यास

1. सही विकल्प पर ✓ का निशान लगाइए—

(क) वर्ण क्या है?

☐ भाषा

☐ भाषा की सबसे छोटी इकाई

☐ भाषा की सबसे बड़ी इकाई

☐ भाषा की सार्थक इकाई

(ख) जिन वर्णों के उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता लेनी पड़ती, वे क्या कहलाते हैं?

☐ स्वर

☐ अयोगवाह

☐ व्यंजन

☐ अनुस्वार

(ग) हिंदी वर्णमाला में मुख्य रूप से कितने वर्ण हैं?

☐ 33

☐ 44

☐ 53

☐ 55

(घ) स्वरों के लिए निश्चित किए गए चिह्न क्या कहलाते हैं?

☐ मात्रा

☐ रेफ

☐ हलंत

☐ विसर्ग

(ङ) 'य, र, ल, व' हैं—

☐ स्पर्श व्यंजन

☐ अंतस्थ व्यंजन

☐ संयुक्त व्यंजन

☐ ऊष्म व्यंजन

(च) 'सत्य' का उचित वर्ण विच्छेद है—

☐ स् + अ + त् + य् + अ

☐ स् + अ + त् + अ + य् + अ

☐ स् + त् + अ + य् + अ

☐ स् + अ + त् + य् + आ

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) वर्ण किसे कहते हैं? इसके कितने भेद होते हैं?

.....

.....

.....

(ख) स्वर तथा इसके भेदों की परिभाषा लिखिए।

.....

.....

.....

(ग) व्यंजन किसे कहते हैं? मुख्य रूप से व्यंजन कितने प्रकार के होते हैं?

.....

.....

.....

(घ) अयोगवाह किसे कहते हैं? ये कितने प्रकार के होते हैं?

.....

.....

.....

(ङ) संयुक्त व्यंजन किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

(च) द्वित्व व्यंजन से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

(छ) श्वास-वायु के आधार पर व्यंजनों के कितने भेद हैं? परिभाषा दीजिए।

.....

3. रिक्त स्थान भरिए-

- (क) वर्ण के नहीं किए जा सकते।
(ख) स्वरों के उच्चारण में सबसे कम समय लगता है।
(ग) व्यंजनों के उच्चारण में हवा मुँह के किसी-न-किसी भाग में रगड़ खाकर बाहर निकलती है।
(घ) जिन व्यंजनों के उच्चारण में हवा कम मात्रा में मुँह से बाहर निकलती है, उन्हें कहते हैं।
(ङ) और न तो स्वर होते हैं, न ही व्यंजन। इन्हें और कहते हैं।

4. निम्नलिखित से बने तीन-तीन शब्द लिखिए-

- (क) संयुक्त व्यंजन =
(ख) संयुक्ताक्षर =
(ग) द्वित्व व्यंजन =
(घ) अयोगवाह =

5. निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद कीजिए-

- (क) नेत्र =
(ख) रक्षक =
(ग) अत्याचार =
(घ) परोपकार =
(ङ) अध्यापिका =
(च) सम्मान =
(छ) प्रसिद्ध =
(ज) हस्ताक्षर =